पावनसंग्रह 28-5-68 ओमशान्ति

आत्माओं को पूरा ज्ञान मिलता है तो आत्मा समझ जाती है कि हम पीसफुल हैं। यहां शरीर मिलने से सायलेन्स से टाकी बन जाते हैं। सायलेन्स ड्रामा कब होता नहीं। मुवी और टाकी होता है। बच्चों को समझाया जाता है आवाज़ जास्ती न करो। आवाज़ से परे जाना है। श्रीनाथ द्वारे आद में जब भोजन बनाते हैं तो आवाज़ नहीं होता है। वहां सभी घी के माल बनते हैं। जगन्नाथ में फिर सिर्फ चावल। इतना फर्क क्यों है। वह हल्का खाना। यहां भी बच्चों को समझाया जाता है हल्का भोजन, न बहुत ऊंच न बहुत नीच। सतयुग में तो घी की नदियां बहती हैं। बच्चे जो नहीं जानते थे सो अभी जानते रहते हैं। सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है सो अभी तुम जानते हो। दिन प्रति दिन आते नये आते जावेंगे। पहले मुंझेंगे फिर आते2 अच्छे हो जावेंगे। समझते जावेंगे। कई बच्चे फारकती डायवोर्स देते हैं। बाप तो किसको नहीं देंगे। बाप ऐसे मुख से खुद नहीं कहेंगे निकल जाओ। समझायेंगे अच्छे होकर चलो। विवेक कहते हैं राजधानी स्थापन होती है। उसमें कम पद वाला भी होंगे। वह जरूर पढ़ने वाले से न पढ़ते हैं तब ही कम पद पाते हैं। अच्छा पढ़ेंगे तो अच्छा पद मिलेगा। यह है समझ। इसको बेहद की बुद्धि कहा जाता है। अभी तुम कितने विशाल बुद्धि बने हो। आगे मंदिर आद में माथा टकते थे। कोई के आपरेशन को नहीं जानते थे। दुनिया में कोई भी नहीं जानते हैं। बाप ने समझाया है शास्त्रों के ज्ञान को कोई ज्ञान नहीं कहा जाता है। बाप खुद ही ज्ञान का सागर है। वह है ही भक्ति मार्ग। आगे ऐसे नहीं कहते थे ईश्वर सर्वव्यापी है। पिता, शिक्षक, ठिकाना हैं। अभी बुद्धि तमोप्रधान बन गई है। सतयुग में देवी-देवतायें पारस बुद्धि थे। बाबा ने समझाया था कहते हैं सर्व में भरी होती है। फिर उस पर बहुत कमाते हैं। परन्तु ऐसे है नहीं। अभी तुम्हारे मस्तक में भरी है। बड़ी ही वैल्युएबुल है। एक एक ज्ञान बखान लाखों रुपये की है। भक्त लोग शास्त्रों के ज्ञान को लाखों मिलकीयत की समझते हैं। परन्तु यह है भक्ति। तुम ही सतयुग के मालिक थे। अभी फिर तुम बन रहे हो। शास्त्रों में लड़ाई आद कितना दिखाया है। शास्त्रों को नहीं मानते हैं ना। तुम बच्चों को ज्ञान मिला है। तुम से पूछते हैं शास्त्रों को मानते हो बोलो हां क्यों नहीं मानते हैं। शास्त्र तो हैं परन्तु भक्ति मार्ग की हैं। ज्ञान से मुक्ति नहीं मिल सकती है। ज्ञान से मुक्ति होती है। शास्त्र है भक्ति की। वह हैं शास्त्रों की अथार्टी। कितने नाम रख देते हैं। श्री श्री 108 जगद्गुरु। जगद्गुरु में तो शक्ति चाहिए जो सभी को पावन बनावे। वह तो एक ही बाप बताते हैं। इसमें आपोजीशन भी बहुत होते हैं। लेबरीयों के वोट को हिलाते बहुत हैं। तुम सच्ची2 नईया हो। भक्ति मार्ग में अपन को नईया समझ पुकारते हो। बाबा नईया मेरी पार लगाओ। अर्थ नहीं समझते। गाते हैं नईया मेरी पार लगाओ। अभी बच्चे समझ गये हैं वैराडूवता भी है, पार भी होता है। बाप कहते हैं मैं पार करता हूं। फिर डूबोते कौन है। सिध कर बताते हैं। अर्जुन को भी कहा है ना। तुमको सुप्रीम गुरु मिला तो फिर वह गुरु आद करने की क्या दरकार है। तुम बाप और रचना के आदि मध्य अन्त को जान गये हो। वह सत-चित आनन्द स्वरूप है। आत्मा चैतन्य है। बाप आनन्द का सागर सुख का सागर है। फिर बच्चों को वर्सा देते हैं। फिर कम जास्ती बच्चों का पुरुषार्थ होता है। रचयिता बाप नई सृष्टि रचते हैं। बाप पुरानी तो नहीं रचेंगे ना। नई को पुरानी होना है। फिर पुरानी को नई बाप बनाते हैं। बाप आकर पूरा समझाते हैं। अभी बाप बच्चों पर बच्चे बाप पर कुर्बान जाते हैं। बाप कह देते हैं यह छी छी दुनिया है। इनको छोड़ दो। ड्रामा में पार्ट है। जरूर ड्रामा प्लेन अनुसार सतयुग आना है। अभी है पुरुषोत्तम संगम युग। सतयुग से त्रेता में आते हैं। उनको पुरुषोत्तम नहीं कहेंगे। सीढ़ी उतरते हो ना। सतयुग में सूर्यवंशी, त्रेता में चन्द्रवंशी। यह तुम बच्चों के सिवाय और कोई समझ न सके। बाप समझाते हैं यह डिनायस्टी है। लक्ष्मी नारायण फर्स्ट सेकण्ड थर्ड। यह ड्रामा है इनको बाप ही जानते हैं। भक्ति में ऐसे होता है। मुंझने की बात नहीं। बीती को चिंतवो नहीं। बीत गया उनको जाकर दूसरा पार्ट बजाना है। हरेक को अपना पार्ट बजाना है। रोने की दरकार ही नहीं। समय भी ऐसा होता जाता है। समय [illegible]

बाप भी वैसे ही समझाते हैं। सतयुग में सुख ही सुख है। अभी है संगम युग। कोर्ट से वे छुट्टी भी न ले सकेंगे। पीनी आदि कुछ भी कर न सकेंगे। बुधि भी ऐसी कहती है हम बाप के बच्चे पार्टधारी हैं। पिछाड़ी में विनाश जरूर होना है। कितने अच्छे2 सामान बनाते रहते हैं। जो कुछ भी तकलीफ न हो। बहुत सुखाला मौत हो जाता। हास्पीटल आदि की दरकार ही नहीं। 2। जन्म सर्जन होता नहीं। न बैरीस्टर न जज। धर्मराज होगा ही नहीं। बच्चों को खुशी भी देते हैं, धीर्य भी देते हैं। शाहुकारों के लिए तो यहां ही स्वर्ग है। यहां राजाई के हकदार गरीब ही बनते हैं। शाहुकारों को धन-दौलत बाल-बच्चों से ही ममत्व निकाल न सके। महल रसपलेन बच्चे आदि याद आते रहेंगे। वहां की तो चीज़ ही और होगी। सायंस दान भी क्या करते हैं एक हार्ट निकाल दूसरी डालते हैं। फिर भी हिम्मत तो करते हैं ना। 5-6 मास चल पड़ता है। क्योंकि आर्टीफिसियल चीज़ें हैं ना। भारत सच्च खण्ड था पुराना को झूठ खण्ड कहा जाता है। वहां तो सभी कुछ नया ही होता है। यहां तो झूठ विगर चल न सके। कोई2 बहुत थोड़े हैं तो सच्च पर ही चलते हैं। बच्चों के लिए भी गायन है अति ईन्द्रिय सुख गोप-गोपियों से पूछो। बाप ज्ञान का सागर पवित्रताका सागर है ना। कहते हैं बच्चों अभी मैं आया हूं अभीतुमको पवित्र बनना पड़े। तुम आये हो यह (ल०ना०) बनने के लिए। तुम से कोई छीन न सके। बना बनाया ड्रामा है। ईश्वर की कृपा की बात ही नहीं। उनको आना ही है बच्चों को पढ़ाने। कल्प2 पढ़ाते हैं। पावन बनाना भी पढ़ाई का एक अंग है। अभी तुम सभी एक्टर्स हो। अभी यह नाटक पूरा होता है। यह एक ही खेल है। सांवरा से गोरा बनते हैं। कल्प का संगम युग है यह। इस पढ़ाई से कितना सुख मिलता है। तो पूरा अटेन्शन देना है। रहना भी अपने घर में है। कृष्ण को याद करने से पाप कटेंगे नहीं। कितना नुकसान हो जाता। वह सभी हैं भक्ति- मार्ग। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों को गुडनाईट और नमस्ते।

रात्रि क्लास 1-6-68 ओमशान्ति

रूहानी बच्चों ने अपने सर्विस का समाचार सुनाया। महाबलेश्वर का। किस ने यह पूछा? (बाप दादा ने) बाप नेदादा द्वारा पूछा तो गोया बाप दादा ने पूछा। यह तो बच्चों को निश्चय है जो ब्राह्मण हैं। बाकी जो ब्राह्मण नहीं उनको निश्चय नहीं है। हो सकता है अगर तकदीर हो तो समझ सकते हैं वरना बेहद का बाप और हद का दादा। क्योंकि बेहद का बाप आते हैं हद के दादा पास। अनेक बार अभी जिनको निश्चय है यह बेहद का बाप है थोड़े ही रोज के लिए आये हैं नई दुनिया स्वर्ग बनाने लिए। तो जरूर पुरुषार्थ कर बन सकते हैं। परन्तु तकदीर में न है तो कह निश्चय नहीं होता। यह बेहद का बाबा है। जिससे ही और सभी वर्सा लेते हैं। अथवा सूर्यवंशी चन्द्रवंशी ने वर्सा लिया है हम भी पुरुषार्थ कर क्यों न लेवें। परन्तु तकदीर में नहीं है तोबुधि में बैठता ही नहीं। सुनते भी हैं परन्तु कान से निकल जाता। समझ जाते हैं बाबा राजधानी स्थापन करते हैं। इसमें हर मर्तबे के होते हैं सो भी जन्म-जन्मान्तर, कल्प-कल्पान्तर की बात है। तो क्यों नहीं हम पुरुषार्थ करें। ऐसे को फालो करें कदमव कदम जिसके कदम में कदम हो। यह बनने का है। हम भी फालो कर क्यों नहीं विजय माला के दाना बन जावें। परन्तु ड्रामा में नहीं है। तो क्या करेंगे। या उनके पार्ट में हो नहीं तो इतना पुरुषार्थ भी नहीं कर सकते हैं। जिनका पार्ट है वह पुरुषार्थ भी करते रहते हैं। बहुत2 मीठे बन जाते हैं। बाप बहुत मीठा है ना। यह भी जानते हो सभी से मुलाकात हम ही बनते हैं। फीलिंग आती है। हम तुच्छ बुधि थे। अभी बाप बिल्कुल स्वच्छ बुधि बनाते हैं। ऐसा कब किसको दुःख नहीं देगा। क्यों कि बाप किसको भी दुःख नहीं देते हैं। अपनी ग्रहचारी से ही अपने को दुःखी अशान्त करते हैं। बाप नहीं दे सकता। बाप तो सब की सदगति करने आये हैं। कोई तंग भी करते हैं तो भी [illegible] है तो सभी को जाना है। जो तंग करते हैं सज़ाएं भी वह खाते हैं। बाप तो है सुख दाता। बेहद का [illegible]